

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में अन्तर्राष्ट्रीय कृषि वैज्ञानिकों के दल का भ्रमण

नई दिल्ली में "चौथी विश्व कृषि संरक्षण कांग्रेस" में आये लगभग 60 अन्तर्राष्ट्रीय कृषि वैज्ञानिकों के दल ने आज 7 फरवरी, 2009 में केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल का भ्रमण किया। देश के कुछ प्रगतिशील किसान मुख्य रूप से बिहार के श्री कृष्ण मुरारी व विरेन्द्र कुमार यादव हरियाणा के श्री महावीर सिंह रौड़ व श्री राजेन्द्र रावल हैदराबाद के अखीनेनी भवानी प्रसाद आदि भी अन्तर्राष्ट्रीय कृषि वैज्ञानिक दल के साथ आए थे। संस्थान आगमन पर संस्थान के निदेशक डा. गुरबचन सिंह ने उनका भव्य स्वागत किया तथा सभी प्रभागाध्यक्षों एवं वैज्ञानिकों के साथ हुई बैठक में संस्थान की शोध गतिविधियों के बारे में विस्तृत रूप से अवगत कराया गया।



अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों के दल को संस्थान के निदेशक व सम्बन्धित वैज्ञानिकों द्वारा बहुउद्देशीय खेती जिसमें मछली पालन, पशुपालन (डेरी), खुम्भ (मशरूम), मुर्गी व बत्तख पालन, फलों, फूलों व सब्जी की खेती, मधुमक्खी पालन इत्यादि शामिल हैं के अलावा संरक्षित खेती में जीरो टिलेज से की गई खेती, फसल अवशेष प्रबन्धन, फसल विविधीकरण आदि पर किये गये शोध प्रयोगों को दिखाया गया। संस्थान के वैज्ञानिकों ने बताया कि जीरो टिलेज प्रणाली से भूमि की उर्वरा क्षमता के संरक्षण में मदद मिलेगी। धान की कटाई के बाद खेत की जुताई व पलेवा नहीं करना पड़ेगा। जीरो टिलेज मशीन से गेहूं की बुवाई की जा सकेगी। जहां खेती की लागत में कमी आयेगी वहीं पैदावार में 25 से 30 प्रतिशत की वृद्धि भी होगी। फसल अवशेष प्रबन्धन के बारे में वैज्ञानिकों ने बताया कि धान का पुआल और गेहूं का डंठल खेतों में ही जलाने से वायु प्रदूषण बढ़ता है। अतः इसे न जलाकर पुआल और गेहूं के भूसे से कम्पोस्ट खाद तैयार करने की सलाह दी इससे खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी। खेतों को समतल करने के लिए लेजर लेवलिंग प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने की सलाह भी संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा दी गई ताकि सिंचाई के लिए कम पानी का उपयोग हो सके। इसके अलावा अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों को बायो डीजल प्लांटस जटरोफा, प्रोसोपिस एवं विभिन्न सहनशील प्रजातियों, हर्बल गार्डन, ट्रांसजैनेक ग्रीन हाउस आदि के शोध प्रयोग व फार्म पर लगाया गया ग्राउंड वाटर रिचार्ज सिस्टम की भी जानकारी दी गई।



संस्थान की उपलब्धियां बताते हुये डा. गुरबचन सिंह ने कहा कि इस संस्थान द्वारा देश की कुल 6.73 मिलियन हैक्टर लवणग्रस्त जमीनों में हरियाणा, पंजाब, उ.प्रदेश की लगभग 1.5 मिलियन हैक्टर लवणग्रस्त भूमियों को सुधारा जा चुका है जिसमें देश को लगभग 8-10 मिलियन टन अतिरिक्त खाद्यान्न मिल रहा है। बहुउद्देशीय खेती का उद्देश्य बताते हुए डा. गुरबचन सिंह ने कहा कि किसान को गेहूं व धान से 6 महीने बाद पैसा मिलता है साथ में धान, पानी की अधिक खपत वाली फसल है इसके उगाने से पानी का दोहन अधिक हो रहा है जिससे भूजल स्तर भी नीचे गिरता जा रहा है। बहुउद्देशीय खेती करने से किसान को रोजाना आमदनी भी होगी। किसान के परिवार को रोजगार घर में ही मिलता रहेगा उसे कहीं बाहर रोजी के लिये नहीं जाना पड़ेगा तथा फसल विविधीकरण के अन्तर्गत कम पानी वाली फसलें लेने से जलस्तर भी गिरने से बचेगा।



संस्थान भ्रमण के अलावा अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों के दल ने गांव बाहुपुर (पानीपत) में कुछ किसानों के खेतों का भ्रमण भी किया जहां पिछले कई वर्षों से संरक्षित कृषि अपनाई जा रही है। वैज्ञानिक दल ने किसानों से बातचीत कर जानकारी ली।

अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों ने इस संस्थान के शोध प्रयोगों में विशेषकर बहुउद्देशीय खेती की भूरी-भूरी प्रशंसा की। अन्त में निदेशक ने उनका संस्थान भ्रमण पर हार्दिक धन्यवाद किया।